यो सै म्हारा
हरियाणा

त्रिलोक फतेहपुरी

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

यो सै म्हारा हरियाणा

ISBN : 978-93-85776-92-2

रचनाकार
त्रिलोक फतेहपुरी

संस्करण : प्रथम 2021
मूल्य : ₹ 200/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग
रफ़त जहां

आवरण
के. शंकर

मुद्रक
आर्यन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com
www.shabdankurprakashan.com

आशीर्वचन

अनोखा कवि चोखा कवि।
काव्य-कर्म रागी कवि...

कवियों मे बड़-भागी कवि त्रिलोक चंद फतेहपुरी अटेली निवासी, काव्य अनुरागी हैं। इनकी पुस्तकों की संख्या आधी दर्जनवीं है अर्थात् पाँच पुस्तकें पाठकों द्वारा बहुत सराही गयी हैं, उसी हौंसले से इनको ऊर्जा प्राप्त हुई है। पाठकों एक से बढ़कर एक लेखक हैं जो हिन्दी साहित्य में अनेक आयाम छू रहे हैं यह एक खुश कर देने वाली अच्छी खबर है! लेखन द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति एक बहुत बड़ी श्रेष्ठ कला है। कहते हैं जिस पर माँ सरस्वती की कृपा होती है वही प्राणी जन्मोजन्म के संस्कारों से स्वाध्याय और विद्वानों के द्वारा इस ज्ञान को प्राप्त करता है।

काव्यात्मक शैली में अभिव्यक्ति सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है। काव्य-धारा में बंधी विचार धारा रुचिकर तथा घने विचारों को कम शब्दों में समेट कर विचार प्रस्तुति की अनूठी और उत्तम कला मानी गई है। कवि त्रिलोकचंद फतेहपुरी जी इस कला में पारंगत हैं। इनकी कविताओं में सामाजिक बुराइयों और विसंगतियों पर करारी चोट की है तो कहीं पर भिन्न भिन्न प्रकार के लोगों को उनके मन में बसी बुराई को वर्णित कर उन्हें सही राह पर चलने के लिये प्रेरित करती हैं। कवि जमीन से जुड़ा हुआ है इसीलिये इर्द-गिर्द के माहोल का इनको अनुभव है। कहीं-कहीं तो बातों ही बातों में ऐसी बात कह दी जो हृदय तल में आसानी से उतर जाती है और पाठक अपने जीवन को सम्हाल लेता है! बस यही तो कविता की शक्ति है।

मैं भाई त्रिलोक चंद फतेहपुरी को साधुवाद देता हूँ और पाठको से निवेदन करता हूँ कि हरियाणवी बोली में लिखी यह पुस्तक "यो सै म्हारा हरियाणा" हरियाणवी संस्कृति और लोक कला का अद्‌भुत नमूना है। आप इस पुस्तक को जरूर पढ़िये, बहुत ज्ञान मिलेगा। मुझे आशा है कि पाठकगण इस पुस्तक को पढ़कर अवश्य लाभान्वित होगें।

हलचल हरियाणवी
हास्य-व्यंग्य कवि
बीकानेर, रेवाड़ी (हरियाणा)

यो सै म्हारा हरियाणा : एक परिदृश्य

अड़े, कड़े, क्योंकर, तू, तन्ने, थम, थारा, म्हारा जिसे कड़क शब्दां आंली, कड़क बोली हरियाणवी, पूरे हरियाणा की शान सै। इसके बोलते ही आदमी तुरंत पहचाण म्हं आ जा सै कि यो छोह्र रा, कै माणस हरियाणे का सै। जिस तरिया हरियाणे का आदमी एकदम सीधा सादा साफ दिल का हो सै, या हरियाणवी खड़ी बोली भी उसी तरहां साफ शुद्ध बिना किसै लाग लपेट कै और बनावट के एक दम दिल की भाषा सै। हरियाणा के आदमियां की तरहां हरियाणवी में लिखी कथा कहाणी, किस्से और कविता भी सीधी दिल म्हं जगहां बणा ले सै। हरियाणवी भाषा अर बोली के सिद्धहस्त कवि श्री त्रिलोक फतेहपुरी की कविताओं का संग्रह "यो सै म्हारा हरियाणा" का शीर्षक नाम ही छाती ठोक कै बता रहा सै कि म्हारे इस हरियाणा की खासियत कै सै। इसने हरियाणा क्यूं कहवै सैं? इस म्हं रहण आ्ले लोगां का सुभाव किसा सै? खाण-पाण अर रहण-सहण किसा सै? शहर और गामां की हालत किसी सै वगैरा-वगैरा? हरियाणा की एक-एक खासियत चाहे वो अच्छी सै या भूंडी सै, रचनाकार ने अपनी कविताओं म्हं समेट कै धर दी सै। और तो और हरियाणा की कुछ कमियां अर बुराइयां भी कवि की पारखी नजर तैं नहीं बच पाई।

आज के हालात में हरियाणा की राजनीति नेता, लोगों का धन और कुर्सी का लालच उनके ओछै कारनामे या कोये भी इसा मुद्दा नहीं जो कवि ने अंडर लाइन करे बिना छोड़ दिया हो। चुनाव की रणभेरी, कुर्सी की तलाश, वोट किसको दूं, कुर्सी की मांग, पानी का बंटवारा, नेताओं के चुनावी वादे, नेता फँसग्ये रै इस तरहां की रचनाओं तैं कवि ने राजनेताओं और राजनीति दोनवां पै करारा व्यंग्य कस्या सैं। दूसरी तरफ हरियाणा म्हं फैली बुराइयां पै भी कवि ने अपनी कलम चलाई सैं। और उनका नफा नुकसान बता कै उनको दूर करण का संदेश भी दिया सैं।

खुशामद, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, अबला हुई हलाल, बेटी माँ को कोस रही सैं जैसी कई रचनाएँ नारी की दुर्दशा को उजागर करै सैं तथा सुधार करण का इशारा भी कर्या सै। खुशामद, ताशः घर का नाश, चटोरा हुआ जमाना, दारू पीनी छोड़ दई, फोकट ए यार, दुनिया बहुरंगी बेडोल, इस तरहां की कई रचनाएं हरियाणा में फैली बुराइयां अर खराब आदतां पै व्यंग्य कसती दीखै सैं। म्हारा शहर रेवाड़ी म्हं कवि नै हरियाणे के शहरां की झांकी दिखाई सै। तो भाग चलूं मैं दिल्ली

म्हं बड़े शहरां की तरफ लोगों के मन का झुकाव साफ उभर के आया सै। लुगाइयां की हड़ताल, करवा चौथ, घंटू होग्या फैल जिसी कवितावां म्हं व्यंग्य के साथ हास्य को मिलावण की कला देखण जोगी सैं।

हरियाणा का नाम हरियाणा ही क्यों पड़ा, इसके कारण ही तरफ भी कवि ने बड़ा ही सही और कड़क इशारा कर्‌या सैं। जिस इलाके में हरि(विष्णु) के अवतार श्री कृष्ण का आणा हो उस नै हरिआणा ही कह्‌ या जावैगा। और इस तैं साफ सुथरा और सटीक नाम और कोये नहीं हो सकता। क्योंकि कुरुक्षेत्र के मैदान म्हं ही तो श्री कृष्ण ने आ कै गीता का उपदेश दिया था। शायद इसै कारण से कवि अपणी भक्ति भावना को दबा नहीं पाया और जैसा कर्म वैसा फल, म्हारी अर्ज सुणो महाराज, तीन गुणों की आत्मा, मन होग्या रे सरपंच, जिसी रचनावां म्हं कवि का भक्ति भाव और आध्यात्मिक चिंतन का स्वर उभर कै आया सैं।

इस कविता संग्रह को पढ़ने के बाद इसा लागै सै कि कविवर त्रिलोक फतेहपुरी ने जीवन के हर रंग म्हं अपणी कलम डुबोकर हरियाणा की बहुरंगी तस्वीर अपणे शब्दां म्हं उकेर दी सै। कवि ने हरियाणा का जो नख-शिख वर्णन कर्‌या सै वो रोचक ही नहीं बल्कि तारीफ का भी हकदार सैं। इस नख-शिख वर्णन म्हं जो कुछ भी कवि को अखरा सैं, उसका निदान भी कवि नै साथ ए साथ बताया सैं। जड़ै एक तरफ कवि विद्यापति की तरिया हरियाणा की नख-शिख तक की सुंदरता नै दिखावै सै, उड़ै दूसरी तरफ कबीर की तरहां दुखती नस भी पकड़े सै अर उसका निदान भी बतावे सै। इसलिए जै विद्यापति और कबीर दोनों का एक साथ आनंद लेना हो तो “यो सै म्हारा हरियाणा” पुस्तक जरूर-जरूर पढ़णी चाहिए। इस उत्तम, अनुपम कृति के लिए कवि त्रिलोक फतेहपुरी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ, शुभाशीष।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राजन
कवि एवं साहित्यकार, नई दिल्ली
संपर्क सूत्र : 9810403529

जिसा नाम उसा काम

मेरा कहण का मतलब यो सै 'देशां म्हं देश हरियाणा जित दूध-दही का खाणा' हरियाणा की एक गजब पिच्छाण सै जो हमनै सबतै निराला बणा री सै। अर इस पिच्छाण नै बणाये राखण खात्तर म्हारे ब्होत से रचनाकारों नै अपणी कलम की ताकत तै हरियाणा के साहित्य भण्डार नै लबालब भरण खात्तर कसूता जोर लगा राक्खा सै। अर भाई इस दौड़ म्हं महेंद्र गढ़ जिले के फतेहपुर गाम के साहित्य साधना म्हं लीन, मृदुभाषी, सरल स्वभाव, कर्मठ, संस्कारवान व्यक्तित्व के धणी श्री त्रिलोक चंद भी पाच्छै कोन्या रह्ये सैं। इन्है लगभग सभी समस्याओं पै अपणी लेखणी चलाई सै। म्हारी नजर म्हं तो इसी कोय बात कोन्या छोड़ी जो इणकी कलम तै दूर रह् यी हो।

इणके काव्य की खास बात या रह् यी सै अक पढ़णिया माणस इतणा खुश होज्या सै अक वाह-वाह कह् या बिना रह् ये ना सकै। त्रिलोक चंद जी हिन्दी प्राध्यापक रहये सै इसलिए हिंदी पै तो पकड़ कसूती सै पर भाई गामोली माहौल म्हं जन्म होण कै कारण हरियाणवी बोली म्हं भी आच्छे माहिर सै। इणके काव्य की भाषा बिल्कुल सरल रह्यो सै जो आम माणस कै आसानी तै समझ म्हं आज्यावै सै। साहित्य भण्डार नै बढावण खात्तर त्रिलोक जी नै पाँच किताब(ऐसी बेटी बण जाऊँ, वाह! भारत की बेटियाँ, मुझे मंच पर आने दो, त्रिलोकी सतसई, घंटू के कारनामे) लिख कै मोटा जोट्टा मार राख्या सै अर ईब या छठी किताब "यो सै म्हारा हरियाणा" जिसम्हं 45 कविता सजा राख्यी सै।

हरियाणा की माटी म्हं खेलकूद कै जितणी बारीकी तै म्हारे रीति- रिवाजों, खाण-पाण, पहणावा, संस्कारों का इन्है जो बखाण करया सै वो ठेठ हरियाणवी म्हं सै। इतणे सुथरे-सुथरे आखर लिख राख्ये सै अक भाई कसूताए तोड़-पाड़ राख्या सै। एक झलक देखिए-

जहाँ देशी खाणा, सादा बाणा,
हँसणा और हँसाणा,
यो सै म्हारा हरियाणा।
जहाँ कुरुक्षेत्र म्हं ज्ञान सिखावण,
हुया हरि का आणा,

यो सै म्हारा हरियाणा।।

हरियाणा के लोगां की या सबतै बड़ी खुब्बी सै अक अपणी बात नै इस तरियां कहवै सै कि वा अपणी आपये एक मजाक बण ज्यावै सै। अर भाई किसै किसै नै तो लिखण का भी कसूताये तजुर्बा होवै सै ,एक एक अक्षर इस तरियां फिट बैठा देवै सै अक उसम्ह कमी काढ़ण का मौका ए कोन्या छोड़ै जिस तरियां त्रिलोक चंद जी नै अपणी कविताई म्हं झाम-सा बैठा राख्या सै।

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" कविता म्हं म्हारी होनहार बेटियाँ का इतणा सुथरा बखाण करया सै जो कि हकीकत म्हं बड़ाई करण जोग्गे सै।

सदा बेटियाँ पढ़ लिख कै
अव्वल नम्बर ल्यावै सैं
उड़ा हवाई जहाज गगन म्हं
अंतरिक्ष म्हं जावै सैं
सबतै ऊँची चोटी चढ़ कै
जग म्हं नाम कमावै सैं
खेलां के म्हं पदक जीत कै
देश की शान बढ़ावै सैं।

इसा कोय विषय बचा ए कोन्या जो इणकी कलम की नजर तै ओझल होग्या हो। दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, लूट खसोट सभ कुरीतियों का आपणे काव्य म्हं बखाण करया सै। नशे की लत किस तरियां माणस नै बर्बाद कर दे सै इसका कविता म्हं घणे सुथरे शब्दां म्हं बखाण करया सैं-

पीण प्याण के चक्कर कै म्हं
बेच दई धरती सारी
बर्तन भांडे टूम ठेकरी
खाली कर दी अलमारी।

बदलते जमाने की तस्वीर कुछ इस तरियां दिखाई सै -

ताणा-बाणा सारा बदल्या,
बदल ग्ये हालात
रीति रस्म रिवाजें बदली
कर ली तहकीकात।

आपा धापी के चक्कर म्हं आज लोगां नै खेती बाड़ी करण के तौर तरीके

भी बदल लिये सै। फसल म्हं इतणे कीटनाशक डालण लाग्ये अक आपणा ख्याल भी कोन्या राख्ते–

खुद ही खेत का बण्या डॉक्टर
छिड़के खूब दवाई
घणी उपज कै लालच म्हं
या धरती बांझ बणाई।

अपणे करे कर्म के फल की महिमा बताते हुये कुछ इस तरियां लिखा सै–

जिसा कर्म करै सै माणस
उसा ए फल पावै सै
आच्छे कर्म करण आले कै
होज्या सै वारे न्यारे
खुद आपणा वो भाग बणावै
चमकै सभी सितारे।

माणस नै शर्मसार करण आली कुरीति कन्या भ्रूण हत्या की बात समझावण खात्तर कि किस तरियां एक नारी, नारी की दुश्मन बण कै एक अणबोल, मासूम की जन्म लेण तै पहल्या ही मौत के घाट उतार देवै सै। इस दर्द भरी पुकार नै एक बेटी किस तरियां अपणी माँ तक पहुँचावै सै। इन्है अपणी कलम तै इस तरियां लिखा सै–

सभ तै साच बता दे माता
ऐसी के लाचारी।
पैदा करके मार दई
बण गई तू हत्यारी।
क्यों नीयत तेरी हराम हुई
बेइज्जत तू सरेआम हुई।
माँ ममता का गला घोंट कर
जग म्हं तू बदनाम हुई।
तू डाकण बण सरनाम हुई
हे माणस खाणी महतारी
पैदा कर के मार दई
बण गई तू हत्यारी।

आखिर म्हं मेरा कहणा यो हे सै श्री त्रिलोक चंद जी की लेखणी साहित्य जगत म्हं बेरोकटोक चालती रहवै। हामनै पूरा भरोसा सै अक इनकी किताब "यो सै म्हारा हरियाणा" साहित्य जगत म्हं अपणी पिच्छाण बणावैगी अर खूब पढ़ी जावैगी ढेर सारा सम्मान मिलैगा। पाठक लोग इस किताब का भरपूर आनंद उठावैगा।भाई मेरा मन की पूछो तो "यो सै म्हारा हरियाणा" काव्य संग्रह पढ़कै इसा लाग्या कि श्री त्रिलोक चंद जी असलियत म्हं शाबासी के हकदार सै। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ ब्होत ब्होत बधाई। थारी कलम पै शारदे माँ की मेहर सदा बणी रहे।

शुभेच्छा सहित!

अशोक कुमार ढोरिया
कवि एवं साहित्यकार
मुबारिकपुर, झज्जर, हरियाणा
संपर्क : 9050978504

जितणी बड़ाई उतणी थोड़ी

ख्याति प्राप्त शिक्षाविद्, कवि अर साहित्यकार श्री त्रिलोक फतेहपुरी जी की, पहली किताब "ऐसी बेटी बण जाऊँ" के बाद लगातार "वाह! भारत की बेटिया", मुझे मंच पर आने दो त्रिलोकी सतसई, घंटू के कारनामे के बाद इब अनकी छठी किताब "यो सै म्हारा हरियाणा" छपण जा रह्यी सै। आं किताब म्हं पैंतालीस कविता सैं। सारी कविता एक तै बढ़ कै एक सैं। म्हारे हरियाणे मैं जो-जो ठाठ बाट सैं वो सारे आं किताब मैं बड़ी सुथरी ढाल़ लिख राखें सैं। किताब का जिसा नाम सै उसा ही इसमैं काम सै-

आपस कै म्हां भाईचारा, नहीं कोये धिंकताणा।
सब बांता के ठाठ बाट सैं, यो सै म्हारा हरियाणा।।

बदल गये हालात देश के, किते पाणी का बंटवारा
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का, लगा रहे सैं नारा
म्हारी गौमाता के साथ मैं, करमों का फल़ न्यारा
किसान भटक्या पथ से, बैरी पाकिस्तान हमारा
दारू पीणी छोड़ दई, इब आगै नहीं दुख पाणा।
सब बांता का ठाठ बाट सैं, यो सै म्हारा हरियाणा।।

हो होल़ी का हुड़दंग यहाँ जा करवा चोथ मनाई
अबला हुई हलाल अ्ड़ै, करें हड़ताल़ लुगाई
किसको दे दूयूं वोट या मन की बात सुणाई
मन होग्या सरपंच मेरा, अर नये साल की बधाई
चटोरा हुया जमाना फेर भी, दूध दही का खाणा।
सब बांता का ठाठ-बाट सै, यो सै म्हारा हरियाणा।।

घंटू होग्या फैल़ बजी चुनावों की रणभेरी
बीज बदी के बोवै मतना, ना चालै हेरा फेरी

त्रिलोक चंद नै कलम उठा कै, सरस्वती माँ टेरी
झटपट पुस्तक लिख डाली, लाई कोन्या देरी
मेरे सारे दोस्त सुणों इसे पढ़णा और पढ़ाणा।
सब बांता का ठाठ बाट सै, यो सै म्हारा हरियाणा।।

जै थम सारे आं किताब नै जी लगा कै पढल्योगे तो न्यूं जाण लियो घर बैठ्या बिना भाड़े सारे हरियाणे की घुमाई करल्योगे। मनै पूरो-पूरो भरोसो सै, आं किताब नै पाठकां तै बहोत प्यार मिलैगो। आखिर मैं श्री त्रिलोक चंद जी को "यो सै मेरा हरियाणा" किताब की बहोत-बहोत बधाई अर साधुवाद।

दलबीर 'फूल', लोक कवि
गाँव लिसान, जिला रेवाड़ी (हरियाणा)
संपर्क : 9467639642

बस थारा तैं निवेदन सैं

लिखणा एक कला से अर या कला अभ्यास तैं ही सीखी जावै सै। कवि वृंद का भी यो ही कहणा सै कि- "करत करत अभ्यास तै जड़मति होत सुजान।" अर जिण के धोरे शब्दों का भंडार सै, उनका तो कै कहणा। उनके लिए तो लिखणा बहोत आसान सै। अर वे ही विद्वान कहावै सैं। पर ठेठ हरियाणवी म्हं लिखणा तो भई खांडे की धार सै। जै किते जरा सी भी चूक होज्या फेर तो अंजाम भुगतना ही पड़ेगा। इब मैं खुद दक्षिणी हरियाणा अहीरवाटी इलाके का रहण आ्ला सूं। अर म्हारी अहीरवाटी हरियाणवी बोली ठेठ हरियाणवी बोली तैं कतीं अलग सै। म्हारा तो यो ही प्रयास सै कि म्हारे प्रदेश की बोली हरियाणवी भाषा बणज्या। तभी म्हारा लिखणा सफल होवैगा।

"यो सै म्हारा हरियाणा" हरियाणवी कविता आ्ली मेरी छठी किताब सै। इस किताब म्हं मन्नै हरियाणा की पहचाण बताण की कोशिश करी सै। म्हारे हरियाणे की लोक संस्कृति दूसरे इलाके तैं न्यारी सै। रीति-रिवाज, रहण-सहण खाण-पाण, पहनावा कतीं न्यारे सैं। या दुनिया हम नै म्हारी बोली तैं भी पिछाणे सै। बस या ई खासियत बताणे की कोशिश करी सै।

मन्नै हरियाणवी कविता लिखण का आशीर्वाद राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हास्य कवि, आदित्य अल्हड़ पुरस्कार विजेता अर मेरे गुरु जी आदरणीय श्री हलचल हरियाणवी जी से मिला। उन्हीं के मार्गदर्शन अनुसार मैं हरियाणवी रचना लिख पाया। मैं उनके चरणां म्हं नत मस्तक होता हूँ, उन्हें नमन करता हूँ। सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार आदरणीय डॉ.राजेंद्र प्रसाद 'राजन' नई दिल्ली का भी मुझे आशीर्वाद मिला। इस किताब की बहोत शानदार जानदार भूमिका लिखी सै, मैं उनका भी हृदय से आभार एवं धन्यवाद प्रकट करूँ सूं। हरियाणवी लोक कवि एवं साहित्यकार श्री दलवीर फूल लिसान, प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार श्री नेमी चंद शांडिल्य एंव श्री अशोक कुमार मुबारकपुर आप तीनों विद्वानां का भी मैं तहेदिल से धन्यवाद करूं सूं कि आपने इस किताब की संरचना म्हं तन मन से सहयोग कर्या। "शब्दांकुर प्रकाशन" नई दिल्ली के प्रकाशक श्री के. शंकर सौम्य का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिसनै मेरी इस किताब के प्रकाशन का बीड़ा उठाया सै। उन सभी कवि मित्रों, साहित्य प्रेमियों का भी तहेदिल से शुक्रिया अदा

करता हूँ जिन्होंने मेरी कविताओं को संशोधित कराण म्हं मेरा सहयोग कर्‌या।

बस थारा तैं यो निवेदन सै कि "यो सै म्हारा हरियाणा" किताब नै पढ़ कै जरूर बताइयो कि या थमने किसीक लाग्यी। जै थमनै कितै कोये कमी लाग्ये तो बताइयो जरूर ताकि मैं आगे सुधार कर सकूं। आप सब नै हाथ जोड़ कै राम-राम, नमस्ते।

थारा लाडला
त्रिलोक फतेहपुरी
अटेली, रेवाड़ी(हरियाणा)

अनुक्रम

म्हारी गौ माता : 17
जैसा कर्म वैसा फल़ : 19
यो सै म्हारा हरियाणा : 21
चार नारियां : 23
म्हारां शहर रेवाड़ी : 25
म्हारी अर्ज सुणो : 28
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ : 30
कविताई का चाव : 33
कुर्सी की तलाश : 35
खुशामद : 37
नेता फँसग्यें रै : 39
नेता के चुनावी वादे : 42
होली का हुड़दंग : 45
हाय बुढ़ापा आया : 47
ताश : घर का नाश : 49
कलम : 52
बदल गये हालात : 54
पाणी का बँटवारा : 56
नए साल का स्वागत : 58
चटोरा हुआ जमाना : 60
चुनावों की रण भेरी : 63
बायोमैट्रिक हाजरी : 65
बोट किसको द्यूँ : 67
रोबोट : 69
लुगाइयाँ की हड़ताल : 72
करवा चौथ : 76
काव्य मंच पै रेस : 78

अबला हुई हलाल : 81
किसान भटक गया : 83
बैरी पाकिस्तान हमारा : 86
दारू पीणी छोड़ दई : 88
भाग चलूँ मैं दिल्ली : 90
तीन गुणों की आत्मा : 92
बागड़ी बणग्या रै मजदूर : 94
मन की बात : 96
निर्दया : 98
यार मेरी ब्आण ना छूटें : 101
बीज बदी के बोवै : 103
फोकटए यार : 105
जेब कर लई भारी : 107
हमें दुखों सैं जोड़ गया : 109
दुनियाँ बहुरंगी बेडोल : 111
कंप्यूटर द्वारा बदली : 113
घंटू होग्या फेल़ : 115
मन होग्या सरपंच : 117

म्हारी गौ माता

बीच भँवर म्हं फँसी धँसी
जिया देख उझल के आता
भारतवासी चेत करो
क्यों कटे म्हारी गौ माता

देव लोक सैं चल के आई
अमृत धन धरती पे लाई
मनवांछित फल सबको देकर
कामधेनु जग म्हं कहलाई
सदा ही करती रही भलाई
सर्व सुखों की दाता
भारतवासी चेत करो
क्यों कटे म्हारी गौ माता

सब सद्गुण का ज्ञान रही सैं
अमूल्य रत्न की खान रही सैं
पालण पोषण जग का करती
भोली अर नादान रही सैं
रखती सबका ध्यान रही सैं
बणी सैं भाग्य विधाता
भारतवासी चेत करो
क्यों कटे म्हारी गौ माता

तीन लोक म्हं रही सैं न्यारी
सुंदर सृष्टि स्वयं सँवारी

गोदान करणे आला की
हर लेवे सैं विपदा सारी
सुखी बणा के नर अर नारी
बणी जगत निर्माता
भारतवासी चेत करो
क्यों कटे म्हारी गौ माता

वेद पुराणाँ म्हं या समाई
ऋषियाँ नै भी महिमा गाई
पाप-पुण्य का फल या देती
आधि-व्याधि सबै मिटाई
इसैं बचा ल्यों बहन व भाई
या सबकी मुक्तिदाता
भारतवासी चेत करो
क्यों कटे म्हारी गौ माता

जैसा कर्म वैसा फल

प्रारब्ध के अनुसार ही
जीव जगत म्हं आवै सै।
जैसा कर्म करे सैं माणस
वैसा ही फल पावै सै।

आच्छे कर्म करण आला के
होज्या सैं वारे-न्यारे
खुद अपणा वो भाग बणावे
चमकै सभी सितारे
बणे यार बहोत सारे
प्रेम की पींग बढ़ावै सै।
जैसा कर्म करें सैं माणस
वैसा ही फल पावै सै।

औराँ की जो करे भलाई
अर दुखियों के दुःख बांटें
वक्त पड़े पे मदद करें जो
दुःख म्हं भी वो सुख छांटें
मुश्किल म्हं जब दिन काटे
उत्साह फर्ज निभावै सैं।
जैसा कर्म करे सैं माणस
वैसा ही फल पावै सै।।

नेम टेम के रस्ते चाल्लै
अपणा लक्ष्य बता दे सैं

सीख ज्ञान की दे के वो
रास्ता सही बता दे सैं
संकट दूर भगा दे सैं
आजीवन मौज मनावै सैं
जैसा कर्म करे सैं माणस
वैसा ही फल पावै सै।।

ज्ञान, तपस्या, भक्ति सैं
सब के आच्छे कर्म बणै
निष्ठा, संयम और नियम सैं
कर्तव्य का पथ धर्म बणै
धरती म्हारी स्वर्ग बणै
सबका जी न्यूँ चाहवै सैं
जैसा कर्म करे सैं माणस
वैसा ही फल पावै सै।।

यो सै म्हारा हरियाणा

जहाँ देशी खाणा, सादा बाणा,
हँसणा और हँसाणा,
यो सै म्हारा हरियाणा।
जहाँ कुरुक्षेत्र म्हं ज्ञान सिखावण
हुया हरि का आणा,
यो सै म्हारा हरियाणा।।

जहाँ रणभूमि म्हं वीर बांकुरे
ना कभी पीठ दिखावैं
सर्जिकल स्ट्राइक कर के
दुश्मन मार भगावैं
वे तोप सैं गोले बरसावैं
चाहवैं आतंक मिटाणा
यो सै म्हारा हरियाणा।।

जहाँ बेईमान ठेकेदारों की
पोल सदा ही खुलती
सही योग्यता और योग्य को
आज नौकरी मिलती
अब रिश्वतखोर दलालों को
पकड़ रहा सैं थाणा।
यो सैं म्हारा हरियाणा।।

कविराज मंच पर सुना व्यंग्य
जहाँ अपणा लक्ष्य बतावैं

कलाकार अर रंगकर्मी भी
जहाँ अपणा हुनर दिखावैं
जहाँ गीता जयंती मना मना
गीता ज्ञान सुणाणा।
यो सै म्हारा हरियाणा।।

जहाँ नोटबंदी के बाद हुया
काले धन का सफाया
नगदी लेण-देण को छोड्या
कैशलेस अपणाया
आज पेटीएम भीम ऐप को
जाणे सभी चलाणा।
यो सै म्हारा हरियाणा।।

जहाँ वाई फाई अर इंटरनेट पै
नर-नारी बतलावै
ऑनलाइन ई-मेल चलें
ट्विटर पै रोब जमावै
आज होया प्रदेश डिजिटल
माणस होग्या स्याणा।
यो सै म्हारा हरियाणा।।

चार नारियाँ

सुण मेरी नारी, सब तै प्यारी
आया अंत अकाल, चाल क्यूँ देर करे।

पहली नार तै कहण लगा
तुझको ज्यादा चाह् या सै,
तेल, शैंपू, साबुन तैं
मलमल बहोत नुहाया सै
हलवा पूरी बर्फी काजू
तुझको बहोत खिलाया सै
नाड़ी नब्ज देखणे खातिर
घर पै डाक्टर आया सै
तन चांदी सा चमकाया सै
चमक्या तेरा भाल, चाल क्यूँ देर करे।
सुण मेरी नारी, सब तै प्यारी
आया अंत अकाल, चाल क्यूँ देर करे।।

दूजी नार तै कहण लगा
तुझ सै सच्ची यारी थी
तुझे जुटाणे की खातिर
बहोत करी होशियारी थी
ठगबाजी, चालाकी सै
भर ली बड़ी तिजारी थी
कोठी, बंगले शान बढ़ावै
सड़क पे चाल्यी लारी थी
तू ही सब तै न्यारी थी
कर दिया मालामाल, चाल क्यूँ देर करे।

सुण मेरी नारी, सब तै प्यारी
आया अंत अकाल, चाल क्यूँ देर करे।।

तीजी नार तै कहण लगा
तुझसै हुया गठजोड़्या था
मामा, फूफा, भाण, भूआ
बेटी तै नाता जोड़्या था
सुख-दुख के म्हां साथ रहे
कती ना पेंडा छोड़्या था
जब जब तूने मुझको चाहा
मनै भी मन मोड़्या था
कदे ना नाता तोड़्या था
सदा ही पूछ्या हाल, चाल क्यूँ देर करे।
सुण मेरी नारी, सब तै प्यारी
आया अंत अकाल, चाल क्यूँ देर करे।।

चौथी नार तै कहण लग्या
तेरे तै आस लगाऊँगा
स्वर्ग-नरक इब भोग लिया
साथ तने ले जाऊँगा
वक्त पड़े तू साथ रही
तेरा एहसान चुकाऊँगा
करणी-भरणी का लेखा जोखा
तुझसै ही कर पाऊँगा
गुण ईश्वर के गाऊँगा
मिटज्या सब जंजाल, चाल क्यूँ देर करें।
सुण मेरी नारी सब तै प्यारी
आया अंत अकाल, चाल क्यूँ देर करें।।

म्हारा शहर रेवाड़ी

सब बातां के ठाठ बाट सैं
कोय चीज ना माड़ी
म्हारा शहर सिकंदर रेवाड़ी।

पार्क और बगीचों म्हं
चहकते नर नार यहाँ
मोल और ब्यूटी पार्लर म्हं
होती आँखें चार यहाँ
होटल और अस्पतालों की
लांबी लगी कतार यहाँ
शिक्षा की कई खुली स्कूलें
मिलते हैं संस्कार यहाँ
यह रावों की राजधानी
अर हेमू की रजवाड़ी।
म्हारा शहर सिकंदर रेवाड़ी।।

बाजारों की चकाचौंध म्हं
होती धक्कम पेल यहाँ
शैतानी जाल बिछाकर के
खेले माया का खेल यहाँ
सीनाजोरी सै कब्जा कर
फुटपाथ पै लगती सैल यहाँ
दुकानदार अर गाहक भी
होते रेलम पेल यहाँ
जनता को मोहित करते
सजा-हाट फुलवाड़ी।

म्हारा शहर सिकंदर रेवाड़ी।।

देनदार अर लेनदार भई
साझेदार भिड़े देखो
पल्लेदार मजदूर मिस्त्री
काम के लिए खड़े देखो
रिश्तेदार बन किराए दार
वे समझदार लड़े देखो
फौजदार अर जैलदार संग
थानेदार चिड़े देखो
सरदार वकील अड़े देखो
खड़्या हँसैं पनवाड़ी।
म्हारा शहर सिकंदर रेवाड़ी।।

जंकशन बण के खड़ा सिकंदर
रेलों की आवा जाही
सगे संबंधी बिछुड़े मिलते
डाल-डाल गलबांही
ट्रक बसों का जाम लगे तब
ऑटो करते अगवाही
चीख चीख कर डाँट रह् या
चौराहे खड़ा सिपाही
रोज कटे चालान यहाँ
फँसता कती अनाड़ी।
म्हारा शहर सिकंदर रेवाड़ी।।

चौक और चौपालों पर
बैठे हैं विद्वान यहाँ
काव्य गोष्ठी नुक्कड़ नाटक
सुणते हैं व्याख्यान यहाँ
सेठ और साहूकारों के
चलते हैं फरमान यहाँ
मंत्री, नेता और विधायक
पाते हैं सम्मान यहाँ
पहलवान सुल्तान यहाँ
सलमान बणा सै याड़ी।
म्हारा शहर सिकंदर रेवाड़ी।।

म्हारी अर्ज सुणो

म्हारी अर्ज सुणो महाराज।
मनोकामना पूर्ण कर दो
जन जन के सिरताज।
म्हारी अर्ज सुणो महाराज।।

परोपकार पर सेवा का
सुंदर सरल सुकाज
हम भी आच्छे कर्म कराँ
बदलो म्हारा मिजाज।
म्हारी अर्ज सुणो महाराज।।

हम सुख का वरदान मांगते
है सुख के मोहताज
अन्न धन सैं भर दो झोली
म्हारे तीर्थराज।
म्हारी अर्ज सुणो महाराज।।

ना ही नीयत डिगे किसी की
साधे सधे समाज
सबकी मर्यादा बणी रहे
माने लोक लिहाज।
म्हारी अर्ज सुणो महाराज।।

आशा लेकर आए सैं हम
लगा रहे आवाज

म्हारा थम कल्याण करो
कराँ तुम्हीं पे नाज।
म्हारी अर्ज सुणो महाराज।।

सारे रिश्ते नाते निभज्याँ
रीति रस्म रिवाज
थारा सिर पे हाथ रहे तो
होय जगत पे राज।
म्हारी अर्ज सुणो महाराज।।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

वेदों म्हं बतलाया सैं
बेटी का मान जताणा।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
सबने न्यूँ समझाणा।।

सदा बेटियाँ पढ़ लिख कर के
अव्वल नंबर ल्यावै सैं
उड़ा हवाई जहाज गगन म्हं
अंतरिक्ष म्हं जावै सैं
सबसैं ऊँची चोटी चढ़ के
जग म्हं नाम कमावै सैं
खेलां के म्हं पदक जीत के
देश की शान बढ़ावै सैं
बेटी झंडा फहरावै सैं
जाणे सैं फर्ज निभाणा।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
सबने न्यूँ समझाणा।।

सदा बेटियाँ मात पिता के
काम म्हं हाथ बटावै सैं
खेत क्यार म्हं काम करैं
नाज घणा उपजावै सैं
झाड़ू पौचा रोज करे सैं
चूल्हा भी सुलगावै सैं
मनचाहा पकवान बणा

कुणबे की भूख मिटावै सैं
बेटी घर नै चलावै सैं
जाणे घर को बसाणा।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
सबने न्यूँ समझाणा।।

कई बेटियाँ रोज सवेरे
टेम तै दफ्तर आवै सैं
ध्यान लगा के काम करे
कंप्यूटर नेट चलावै सैं
नई पुरानी सभी फाइलें
जल्दी सैं निपटावै सैं
रिश्वत और दलाली के
कती ना हाथ लगावै सैं
सच्चे मन सैं करे नौकरी
ल्यावै नहीं उल्हाणा।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
सबने न्यूँ समझाणा।।

कोये खून के कोई प्यार के
रिश्ते सभी निभावै सैं
सेवा ममता भाव जगा के
अपणापन दिखलावै सैं
हार-जीत व सुख-दुख के म्हां

सबने ही समझावै सैं
उजड़े हुए किसी भी घर को
बेटी स्वर्ग बणावै सैं

भव सागर पार लगावै सैं
जाणे पतवार चलाणा।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
सबने न्यूँ समझाणा।।

कविताई का चाव

कविताई का चाव चढ्या
भाव उमड़ कै आवैं।
सद्गुरु की कृपा होज्या तो
कविता सिरे चढ़ जावै।।

बीस बरस की हुई कविता
नहीं जवानी पाई
रही कल्पना में खोई
तुकबंदी सिर्फ मिलाई
कदे ना ढंग तै सज पाई
यूँ मेरा मन पछतावै।
सद्गुरु की कृपा होज्या तो
कविता सिरे चढ़ जावै।।

पुस्तक पढ़ बेहाल हुया
इब दिन म्हं दीखें तारे
अलंकार के बोध बिना ही
मुक्तक घूमे न्यारे
बलाघात लय छंद के मारे
लघु-गुरु समझावै
सतगुरु की कृपा होज्या तो
कविता सिरे चढ़ जावै।।

शब्द चयन के तालमेल सै
गुण का रंग भी छँटज्याँ

हास्य-व्यंग्य कोशिश करे तो
सही अर्थ भी बँटज्याँ
गुरु के कारण संकट कटज्याँ
भाव स्पष्ट कर पावै।
सतगुरु की कृपा होज्या तो
कविता सिरे चढ़ जावै।।

बहुत लिखी पर व्यर्थ गई
अब तक ना छप पाई
बांध सब्र का टूट गया
तब गुरु की महिमा गाई
नहीं रंग म्हं रंग पाई
गुरु बार-बार रटवावै
सतगुरु की कृपा होज्या तो
कविता सिरे चढ़ जावै।।

कुर्सी की तलाश

हम नें तेरी तलाश म्हं
दर दर की ठोकर खाई सै।
जिसकी लाठी उसकी कुर्सी
बात समझ यो आई सै।।

सिंह और सिंहनी की तू बणी सैं दासी
सियारों के खून की तू बणी सै प्यासी
भूखें दुष्ट भड़ियों की तू बणी सैं फाँसी
सियासी कुचालों की तू बणी विलासी
बांदर और लंगूरों के
दम पै तू इतराई सै।
जिसकी लाठी उसकी कुर्सी
बात समझ यो आई सै।।

गूंगे और बहरे भी तेरी ही चाह म्हं
उल्लू भी मौन साधै तेरी ही बाँह म्हं
चिपकै चमगादड़ भी तेरी ही छाँह म्हं
हाथी चिंघाड़ै खड़े तेरी ही राह म्हं
तेरी पीठ पावण नै
करै हाथा पाई सैं।
जिसकी लाठी उसकी कुर्सी
बात समझ यो आई सैं।।

गड़े हुए मुर्दां नै तू ही उखाड़े सैं
पड़दे के कारनामा नै तू ही उघाड़े सैं

घुड़की दिखाण आला नै तू ही पछाड़े सैं
खिल्ली उड़ाण वाला नै तू ही लताड़े सैं
धनवाना नै गले लगावै
निर्धन सैं कतराई सै।
जिसकी लाठी उसकी कुर्सी
बात समझ यो आई सै।।

सांप आस्तीन के भी तेरे खानदान म्हं
बदले सैं गिरगिटी रंग तेरे अभयदान म्हं
बिछावै सैं आँख भी तेरे सम्मान म्हं
बदलै सैं करवट भी तेरे अरमान म्हं
तू ही भाग्य विधाता दीखै
नजर मेरी ललचाई सै।
जिसकी लाठी उसकी कुर्सी
बात समझ यो आई सै।।

खुशामद

बिना खुशामद आज के युग म्हं
मिलै विफलता है
खुशामद बड़ी सफलता है।

करो खुशामद पत्नी राजी
मिटज्या सै घर की नाराजी
कर द् यो ना फरमाइश पूरी
खूब चले फिर आतिशबाजी
हास्य हँसी की फुलझड़ियों सैं
घर फूलता फलता है।
खुशामद बड़ी सफलता है।।

करो खुशामद यार बणाओ
खुद पीओ अर उसै पिलाओ
अपणा उल्लू सीधा करके
बिगड़ा अपणा काम बणाओ
आज के युग म्हं प्यारे भैया
आम यह चलता है
खुशामद बड़ी सफलता है।।

बिना खुशामद काम ना होता
तू भी लगा इसी म्हं गोता
करो खुशामद, चाटुकारी
चमची म्हं ये ही गुण होता
बिना खुशामद बॉस भी मेरा

आग उगलता है।
खुशामद बड़ी सफलता है।।

करो खुशामद मिलती मेवा
खुश होते सब देवी देवा
करो खुशामद गुणी जनों की
मिटे अभाव अर भरे भरेवा
भाव परख के दास जनों के
गुरु पिघलता है।
खुशामद बड़ी सफलता है।।

नेता फँसग्ये रै

नेता फँसग्ये रै।
इस कुर्सी के अहंकार म्हं,
नेता फँसग्ये रै।

सत्ता मद म्हं चूर हो गए
खूब करी मनमानी
दो नंबर के काम करै सब
ना माने अभिमानी
आज खुली सैं पोल सभी की
याद आ गई नानी
झूठे कागज दिखा रहे सैं
कर-कर याद जबानी
हाँ, कर-कर याद जबानी
फिर क्या हुआ?
नेता फँसग्ये रै, सत्ता की मारममार म्हं।
नेता फँसग्ये रै।।

बड़े-बड़े ठेकेदारों की
निकल गई गुमराई
काले धन को छुपा रहे थे
कर करके चतुराई
सूदखोर बेईमानों की
अकल ठिकाने आई
रिश्वतखोर दलालों की भी
हो गई बंद कमाई

हाँ, हो गई बंद कमाई
फिर क्या हुआ?
नेता फँसग्ये रै, यह आपस की तकरार म्हं।
नेता फँसग्ये रै।।

बड़े-बड़े घोटाले करके
चांदी जिसने कूटी
जमा विदेशों में धन करके
सदा मौज ही लूटी
जांच हुई तब दोषी पाए
किस्मत उनकी फूटी
दर्ज मुकदमे हुए सभी के
डोर हाथ सै छूटी
हाँ, डोर हाथ सै छूटी
फिर क्या हुआ?
नेता फँसग्ये रै, न्यायालय की फटकार म्हं।
नेता फँसग्ये रै।।

कुर्सी की चिंता म्हं नेता
बणग्या भीगी बिल्ली
जब भी सीनाजोरी करता
लोग उड़ाते खिल्ली
सत्ता से बेदखल हो गया
मुरझा गई अब लिली

आँख फाड़ के देख रहा सै
दूर खिसकग्यी दिल्ली

हां, दूर खिसकग्यी दिल्ली,
फिर क्या हुआ?
नेता फँसग्ये रै, इस कुर्सी की दरकार म्हं।
नेता फँसग्ये रै, नेता फँसग्ये रै।

नेता के चुनावी वादे

चढ़ा चुनावी रंग नेता के मजमा घणा जमाया।
माइक स्पीकर डीजे ले अपणा फरमान सुणाया।।

मेरी सारी चाल सुणो तो
मैं खुशहाल बणा दूँगा
बीपीएल की डिग्री सै
मैं धनपाल बणा दूँगा
बेशक हो लाचार कोई
मैं सुखपाल बणा दूँगा
सारे मिल कै जय बोलो तो
मालामाल बणा दूँगा
मैं लोकपाल बणा दूँगा गुंडों का करूँ सफाया।
माइक स्पीकर डीजे ले अणना फरमान सुणाया।।

कूड़ा करकट और गंदगी
सारी साफ करा दूँगा
जल बँटवारे के झगड़े का
मैं इंसाफ करा दूँगा
छोटे-बड़े जमींदारा का
कर्जा माफ करा दूँगा

खाद बीज और जीएसटी का
रेट भी हाफ करा दूँगा
मैं दु:ख का ग्राफ घटा दूँगा, कर दूँ मन का चाह् या।
माइक स्पीकर डीजे ले, अपणा फरमान सुणाया।।

थोड़े पढ़े-लिखे का भी मैं
कॉलिज म्हं नाम लिखा दूँ
गुजर बसर हो सही ढंग सै
आँखर चार सिखा दूँ
दर दर की ठोकर ना खावे
ऐसी राह दिखा दूँ
रोजगार पा के इतरावे
उसको मजा चखा दूँ
घर आए के चरण पखारूँ, जो ल्यावे धन अर माया ।
माइक स्पीकर डीजे ले, अपणा फरमान सुणाया।।

लूले लंगड़े लड़े नहीं
राजी रहे अंधा काणा
हकला टकला बणे सही
रोब जमावे बण स्याणा
सारे नेता बणे वही
जो जाणे देश चलाणा
चमचे सारे करें कही
करें नहीं धिंगताणा
गुर्गों का गान पड़े गाणा बिरला समझ ही पाया।
माइक स्पीकर डीजे ले, अपणा फरमान सुणाया।

चँहूओर चाँदनी छिटका
मैं चंदा को झुठलाऊँ
घुप्प अंधेरे म्हं लटका
दिन म्हं तारे दिखलाऊँ
ऊँची-ऊँची कुर्सी झटका

अनपढ़ सारे बिठलाऊँ
बगिया की कलियों को चटका
फूल बणा मैं इठलाऊँ
दांवपेच सारे सिखलाऊँ, ना फिरे कोई भरमाया।
माइक स्पीकर डीजे ले, अणना फरमान सुणाया।।

ओछी मंदी बात करूँ ना
ठेके बंद करा दूँगा
धर्म जात भी कदे बँटे ना
ऐसा प्रबंध करा दूँगा
जाली धंधे बंद करे ना
उनमें द्वंद्व करा दूँगा
भाई-भाई का बैर मिटा
मैं रजामंद करा दूँगा
सत् चित आनंद करा दूँगा जब रचूँ सियासी माया।
माइक स्पीकर डीजे ली अपणा फरमान सुणाया।।

होली का हुड़ दंग

होली का हुड़दंग मचा सै
बच कै रहणा भाई।
हाँसी म्हं खांसी हो जावै
दुनिया कहती आई।।

आपस म्हं करै पकड़ धकड़
जकड़ लेय जिब काया
सिंथेटिक रंग रगड़-रगड़ कै
चेहरा सुर्ख बणाया
आँख्यां म्हं रेत्ता भरग्या
देता नहीं दिखाई।
हाँसी म्हं खांसी हो जावै
दुनिया कहती आई।।

टुल्ल नशे म्हं चूर रहै
बणा-बणा कै टोल़ी
रंग भरी पिचकारी मारै
लिकड़े उस म्हं गोल़ी
डर कै मारै दबज्या बोली
चिल्ली मारै दुहाई।
हाँसी म्हं खाँसी हो जावै
दुनिया कहती आई।।

कपड़े फाड़े नंगा कर दे
जो आँख्यां म्हं खटकै

सारै मिल कै घूसै मारै
ठा नाली म्हं पटके
हाड़ तोड़ घर जा सटके
ये निर्लज्ज हरजाई।
हाँसी म्हं खाँसी हो जावै
दुनिया कहती आई।।

चाची ताई माँ बरगी हों
उण पै भी रंग डाल्लै
झूम नशे म्हं गंदा बोलै
लंगड़ी कुतिया ज्यूँ चाल्लै
काण करो ना नीच बणों
न्यूँ बड़का सीख सिखाई।
हाँसी म्हं खाँसी हो जावै
दुनिया कहती आई।।

हाय बुढ़ापा आया

इब बच्च्या खून का टोपा ना
धोळी होग्यी काया।
हालत मेरी बिगड़ गई
हाय बुढ़ापा आया।।

आँख गई संसार गया
इब मारूँ सूँ टपटैळा
ओळी सोळी बात करूँ
हुया बुद्धि का पटमेळा
गोड्या तैं चाल्या जा ना
हुया गात सूक कै भेळा
कान फूट कै भाठा होग्ये
सुणता कोन्या रैळा
दाँत टूट कै चिपी जाबड़ी
ना टिक्कड़ जाय चबाया।
हालत मेरी बिगड़ गई
हाय बुढ़ापा आया।।

भरी जवानी नाच्याँ कूद्‌या
अपणा रोब जमाया था
पंचायत म्हं बोलणियाँ
मैं कदे नहीं शरमाया था
दस दस का मन्नै पेट भर्‌या
कमा कमा कै ल्याया था
दो के बदले चार खर्च कै
पैसा ब्होत उड़ाया था
इब तरस्यूँ पाई पाई नै
हाथ रही ना माया।

हालत मेरी बिगड़ गई
हाय बुढ़ापा आया।।

आई साठी बुद्धि नाटी
मन म्हं उठैं हिलोरे
ये भी करल्यूँ, वो भी करल्यूँ
भरल्यूँ धन के बोरै
इब कुणबा ना गौर करै
हुये निकम्मे छोरै
पड़ा खाट म्हं गुर्राऊँ
ना आवै कोई धोरै
उल्टे सुल्टे बोल बोल कै
सब नै ही ठुकराया।
हालत मेरी बिगड़ गई
हाय बुढ़ापा आया।।

करतब कर्मों के देख्ये
देख्यी दुनियादारी
जीर्ण-शीर्ण काया होग्यी
लाग्यी गैल बीमारी
कब तक करूँ मलाल दिखै
भोग रह्या लाचारी
सिर पै काल़ खड़ा दीख्यै
कब आवैगी बारी
अंत एक दिन जाणा होगा
अटल सत्य बतलाया।
हालत मेरी बिगड़ गई
हाय बुढ़ापा आया।

ताश : घर का नाश

मेरा पड़ोसी ठालम ठल्ला
दिनभर खेले ताश दिखे।
हार जीत के चक्कर म्हं
कर लिया घर का नाश दिखे।।

खाय सवेरे बासी रोटी
रोज मांड ले पाल़ा
जोश-जोश म्हं नाता जोड़े
कदे जीजा कदे साल़ा
घर म्हं पीसैं कदे ना छोड़े
टोह लै भीत का आल़ा
बाजी हार के घर आ बैठे
पिटग्या कती दिवाल़ा
घर म्हं मूसैं व्रत करें
यो करता फिरे बकवास दिखे
हार जीत के चक्कर म्हं
कर लिया घर का नाश दिखे।।

ताल ठोक के उधम मचावे
जीत कदे यो जावै
खुशी खुशी म्हं पागल होज्याँ
खुद ही फीत लगावै
कदे ताश म्हं हार हुई ना
यारा नै बहकावै
झूठी डींग मारता डोले

जम के पीवे प्यावै
दारू पी कै चंपत होज्याँ
जो थे खासम खास दिखे
हार जीत के चक्कर म्हं
कर लिया घर का नाश दिखे।।

खेल खेल म्हं दिन ढलज्या
ना देता कोई दिहाड़ी
घर की हालत खस्ता हो गई
खुद ही शान बिगाड़ी
जोड़-तोड़ कर के ही जीवे
मूर्ख निपट अनाड़ी
इसै हाल म्हं कब तक चाल्लै
या गृहस्थी की गाड़ी
किसै तै मांगे बीस उधारे
किसै तैं लिए पचास दिखे।
हार जीत के चक्कर म्हं
कर लिया घर का नाश दिखे।।

किसै कै लेके उल्टा ना दे
घूमै साहूकार बण्या
इधर उधर तै झूठ बोल कै
कर लिया दिखे उधार पण्या
सिवा ताश पीटण के इसका
कोय नहीं रुजगार सुण्या
बड़ी-बड़ी यो डींग हांकता

मन म्हं सै हुशियार घणा
मूंड पकड़ कै रोवेगा
हो रह्या सै आभास दिखे।
हार जीत के चक्कर म्हं
कर लिया घर का नाश दिखे।।

कलम

कलम तू रही सदा अनमोल।
गहरे राज उजागर करती
खोलती सबकी पोल।
कलम तू रही सदा अनमोल।।

पोथी लिख पहचान कराती
कवि और विद्वान बणाती
जो भी लिखे ज्ञान की पाती
उसका ही सम्मान बढ़ाती
भले-बुरे इंसान बताती
पीट-पीट कै ढोल।
कलम तू रही सदा अनमोल।।

जब जब चलै लेखनी आगै
सोई किस्मत उसकी जागै
नीयत ठीक बणी हो तो
कागज पर तेजी से भागै
आस्तीन के सांपों की
तू लेती नब्ज टटोल।
कलम तू रही सदा अनमोल।।

मुंशी जी की बणी दीवानी
हर घटना की कहै कहानी
मर्म भी तेरा वो ही जाने
करते जो तुझ से मनमानी
भूल से जब होती नादानी
देती उड़ा मखोल।
कलम तू रही सदा अनमोल।।

जिस पै तेरा जुनून चढ़्या सै
मनमर्जी मजमून गढ़्या सै
नई नई रचनाएं रच कै
बातों का बातून बढ़्या सै
कलम तेरा ही मोल बढ़्या सै
ऊँचे तेरे बोल।
कलम तू रही सदा अनमोल।।

बदल गये हालात

ताणा-बाणा सारा बदल्या,
बदल गये हालात।
रीति-रस्म-रिवाजें बदली,
कर ली तहकीकात।।

सब तैं पहल्या युवा बदले
इन म्हं आग्या टोटा
ये फोकट का माल़ उड़ावैं
कर्म करै सैं खोटा
बात बात पे मारै सोटा
करैं घणी खुराफात।
रीति-रस्म-रिवाजे बदली,
कर ली तहकीकात।।

फैंशन म्हं आजाद हुई
मटक रही सै नारी
घूंघट गाती छोड़ दई
इब निर्लज्जता धारी
चला रही सै तेग दुधारी
रंगे सैं दोनों हाथ।

रीति-रस्म-रिवाजें बदली
कर ली तहकीकात।।

पहनावैं की बात निराल़ी
ओछे कपड़े भावैं

निजता का अधिकार जता
नंगापन अजमावै
अपणी सारी देह दिखावै
फैंशन की करामात।
रीति-रस्म-रिवाजें बदली
कर ली तहकीकात।।

खाण-पाण भी बदल गया
और बदली सै रोटी
सब बोतल का पाणी पीवै
बंद हुई सै टोंटी
'फास्ट फूड' सै बंधी लंगोटी
खावैं बासी भात।
रीति-रस्म-रिवाजें बदली
कर ली तहकीकात।।

ब्याह-शादी की रस्में बदली
बजती ना शहनाई
दुल्हन घोड़ी पै चढ़ कै
दुल्हे के द्वारे आई
दुल्हे की हुई गोद भराई
हो रही उल्टी बात ।
रीति-रस्म-रिवाजें बदली
कर ली तहकीकात ।।

पाणी का बँटवारा

जल बँटवारे को लेकर कै
खींचतान सै जारी।
सतलुज यमुना लिंक नहर बिन
भोग रहे लाचारी।।

जब जब चढ़ा सियासी पारा
हुआ नहीं सही बँटवारा
जल बिन जीवन रहा अधूरा
माणस लड़ लड़ भी हारा
सत्ता का ना मिला सहारा
फूटी किस्मत म्हारी।
सतलुज यमुना लिंक नहर बिन
भोग रहे लाचारी।।

रोज छपै ये खबर नहर की
आज खुदी कल भर दी
यमुना लिंक नहर नै म्हारी
रे-रे माटी कर दी
साठ बरस सैं सुणते आए
हो रही ये झखमारी।
सतलुज यमुना लिंक नहर बिन
भोग रहे लाचारी।।

कई बरस हो गए तरसते
नहर बणी क्या गंगा
नाम नहर का लेकर होता

हिंदु-सिक्ख म्हं दंगा
जल्दी सै मेटो यो पंगा
मिटज्याँ विपदा सारी।
सतलुज यमुना लिंक नहर बिन
भोग रहे लाचारी।।

कोर्ट कर दे सही फैसला
लिंक नहर या बणज्या
किस्मत की कालिख धुल जाए
हिस्सैं का पाणी मिलज्याँ
धरा कमल सी म्हारी खिलज्याँ
खुश होज्याँ नर-नारी।
सतलुज यमुना लिंक नहर बिन
भोग रहे लाचारी।।

नए साल का स्वागत

नए साल का करो स्वागत
मिल कै खुशी मनाओ।
एक दूजे नै देओ बधाई
रल मिल मंगल गाओ।

सही टेम पै बदले मौसम
टेम पै आज्या बारिश
कूड़ा करकट बहा कै लेज्या
तन की मिट ज्या खारिश
आबल खेती उपजे धरती
नाम प्रभु का ध्याओ।
एक दूजे नै देओ बधाई
रल मिल मंगल गाओ।।

नकल मार के पास भी होज्या
मुफ्त म्हं मिलज्या डिग्री
चेहरा झूम उठे खुशियों सैं
बात भी बण ज्या बिगरी
सबने यार मिले जिगरी
मन ही मन मुस्काओ।

एक दूजे नै देओ बधाई
रल मिल मंगल गाओ।।

दन दनादन धन वर्षा हो
बड़ी लाटरी लग जावै

सबके घर की कंगाली भी
पूँछ दबा कै भग जावैं
किस्मत सबकी खुल जावै
मुंह मांगा फल पाओ।
एक दूजे नै देओ बधाई
रल मिल मंगल गाओ।।

बढ़ती खेती नष्ट करे जो
सियार व चूहे घटज्याँ
खेत क्यार म्हं बढ़े अड़ंगा
वो खरपतवार सिमटज्याँ
झूठों के सरदार निपटज्याँ
धरती स्वर्ग बणाओ।
एक दूजे नै देओ बधाई
रल मिल मंगल गाओ।।

चटोरा हुआ जमाना

खुदगर्जी म्हं देश बिगड़ग्या
पड़ग्या सही बताना।
चटोरा हुआ जमाना, चटोरा हुआ जमाना।।

कदे सुण्या था एक चटोरा
चट्ट करग्या था चारा
खेल सियासी खेल गया
कोर्ट का लिया सहारा
गुपचुप बैठ दलाली चाट्टे
कहै हवाला सारा
खूब हवाई सैर करी
लंदन म्हं यान उतारा
पर उपदेश कुशल बहुतेरे
खुद उपदेश ना माना।
चटोरा हुआ जमाना,
चटोरा हुआ जमाना।।

नाली का फंड चाट गए
सिकुड़ गया गलियारा
टूटी सड़के सुधरी कोन्या
लगा थेकली हारा
बूढ़ों की लई चाट पैंशन
खाता खुलग्या न्यारा
बीपीएल अपंगो का फंड
चट्ट करग्ये सारा

बेईमानों की फौज कै आगे
भूल गया मुस्काना।
चटोरा हुआ जमाना, चटोरा हुआ जमाना।।

कोई चाटग्या बजरी रेती
खींच लई धरती की खाल
कोई चाटग्या झूठी थाली
मार रहा तर माल
कोई चाटग्या दूध मलाई
सुर्ख हुए सै गाल
भौंरे की ज्यों चाट लिए
सब फूल हुए बेहाल
स्वार्थ की जब टपकी राल
चट करग्ये दौलतखाना।
चटोरा हुआ जमाना, चटोरा हुआ जमाना।।

नए नए चिटफंड बणा के
पैसा चाट रह् ये
हर सौदे म्हं खाय दलाली
रलमिल बाँट रह् ये
मंत्री, संतरी या अफसर
सब चांदी काट रह् ये
कौड़ी भाव खरीद कै भूमि
प्लाट ये काट रह् ये
ऊपर ले अधिकारी को भी
देते है नजराना।
चटोरा हुआ जमाना, चटोरा हुआ जमाना।।

शासन ही खुद करै कलंकित
अपणे ही शासन को
राशन वितरक चाट रह् ये
जनता के राशन को
दुर्योधन क्या सीख सिखावै
भाई दुशासन को
प्रशासक खुद भंग कर रह् ये
अपणे अनुशासन को
उल्टा चोर ही डाँट लगावै
बिगड़ा ताना बाना।
चटोरा हुआ जमाना, चटोरा हुआ जमाना।।

चुनावों की रण भेरी

बजी चुनावों की रण भेरी
नेता ढोल बजावैं।
दाँव पेच सारे अपणा कै
वोटर नै समझावैं।।

पते ठिकाणे पूछ-पूछ कै
वोटर कै घर जावै सैं
चाचा ताऊ दादी दादा कै
पावों हाथ लगावै सैं
टाबर सै हाथ मिलावै सैं
युवा नै गले लगावैं।
दाँव पेच सारे अपण कै
वोटर नै समझावैं।।

पैसा दारु नाज बाँटतै
बाँटे कंबल चादर
हाथ जोड़ कै घर म्हं घुसज्याँ
कह सर अंकल फादर
नई बहू का कर कै आदर
भूवा भाण बणावैं।
दाँव पेच सारे अपणा कै
वोटर नै समझावैं।।

लाउड स्पीकर डीजे ऊपर
देश प्रेम का गावैं राग

पूरा थारा वादा कर दयूँ
नाचो गाओ खेलो फाग
सारे दुखड़े ज्यांगे भाग
सोए भाग जगावैं।
दांव पेच सारे अपणा कै
वोटर नै समझावैं।।

वोटरो की भीड़ देख कै
नेता जी होग्ये राजी
इब इब कै थम अजमा लो
दूर करूं सब नाराजी
नेता पक्की जीत बता कै
फूल्याँ नहीं समावैं।
दांव पेच सारे अपना कै
वोटर नै समझावैं।।

बायोमैट्रिक हाजरी

बायोमैट्रिक लगै हाजरी
कर्मचारी घबरावै।
झटपट हो तैयार सवेरे
सही समय दफ्तर आवैं।।

लेट आण कै बणा बहाने
रोज सुणाया करते
अपणे अफसर नै खुश कर कै
मौज उड़ाया करते
मनमर्जी आ-जाया करते
इब सोच-सोच पछतावैं।
झटपट हो तैयार सवेरे
सही समय दफ्तर आवैं।।

रहे निठल्ले गप्पे मारै
बणा-बणा कर टोली
बड़े मजे सैं करी नौकरी
आज दब गई बोली
सीसी टीवी ने पोल सै खोली
कामचोर कहलावैं।
झटपट हो तैयार सवेरे
सही समय दफ्तर आवैं।।

आगे सैं यदि लेट रहा तो
छुट्टी हॉफ भरैगी

गायब हो गया बिना सूचना
इब ना माफ करैगी
भेजा तेरा साफ करैगी
होश ठिकाणे आवैं।
झटपट हो तैयार सवेरे
सही समय दफ्तर आवैं।।

यूँ ही लगती रही हाजरी
आदत भी छुट जावैगी
सही समय पर काम करेगा
खूब सैलरी बढ़ जावैगी
नींद चैन की आवैगी
मुखिया न्यूँ समझावैं।
झटपट हो तैयार सवेरे
सही समय दफ्तर आवैं।।

बोट किसको द्यूँ

बताओ किसको दे द्यूँ बोट?
याचक की ज्यों खड़े द्वार पै
लिए भीड़ की ओट।
बताओ किसको दे द्यूँ बोट?

धोलपोश बण नेता आए
संग वादों की गठरी लाए
मुझको अपणा खास बता कै
हाथ जोड़ कै वो मुस्काए
पांच बरस तैं गायब थे
इब आए सैं लौट।
बताओ किसको दे द्यूँ बोट?

दिखते कितने सीधे सादे
आए लेकर गुप्त इरादे
सत्ता मद म्हं चूर हुए थे
भूल गए ये पिछले वादे
लोकतंत्र के प्रहरी प्यादे
कस के खड़े लंगोट।
बताओ किसको दे द्यूँ बोट?

बड़ा कमीशन पाणे आळे
लूट के धन ले जाणे आळे
खून गरीब का चूस रह्ये
दाँत दिखा कै खाणे आळे
दिन नै रात बनावण आळे
करते लूट खसोट।
बताओ किसको दे द्यूँ बोट?

माइक लेकर भौंक रह्ये सैं
छल बल धनबल झोंक रह्ये सैं
इक थैली के चट्टे बट्टे
जीत का दावा ठोक रह्ये सैं
हर बोटर नै टोक रह्ये सैं
करना मेरी सपोट।
बताओ किसको दे द्यूँ बोट।।

नेताओं की रीत वही सैं
सदा बदलती नीत रही सैं
मन का भेद कभी ना खोलें
गंगा उल्टी इनकी बही सैं
त्रिलोक ने मन की बात कही सैं
कितना इण म्हं खोट।
बताओ किसको दे द्यूँ बोट।।

याचक की ज्यों खड़े द्वार पै
लिए भीड़ की ओट।
बताओ किसको दे द्यूँ बोट।।

रोबोट

आओ मिल कै जतन करै
सुखी रहै दुनिया सारी।
सभी काम रोबोट करै
मौज करै सब नरनारी।।

जब होज्याँ बीमार कोई
रोबोट ही चैक करै
चीरफाड़ मरहम पट्टी
रोबोट ही पैक करै
पीठ दर्द का सैक करै
मेटे सबकी लाचारी।
सभी काम रोबोट करै
मौज करै सब नरनारी।।

हर जवान छोरा छोरी तैं
रोबोट ही प्यार करै
चैटिंग डेटिंग हनीमून का
सच्चा इकरार करै
बच्चें पैदा रोबोट करै
नाम धरै सरकारी।।
सभी काम रोबोट करै
मौज करै सब नरनारी।।

खेतीबाड़ी रोबोट करै तो
नाज घणा उपजावै
घर के डांगर ढोरां नै वो

सान्नी न्यार चरावै
घास खोद कै वो ही ल्यावै
खड़ी हँसै घसियारी।
सभी काम रोबोट करै
मौज करै सब नरनारी।।

चौराहे के बीच खड़ा
रोबोट ही राह बतावै
रेल मैट्रो कार ट्रक का
चालक बण धर्रावै
वो ही नभ की सैर करावै
राकेट चलै बण लारी।
सभी काम रोबोट करै
मौज करै सब नरनारी।।

छोटे-बड़े कारखानों म्हं
रोबोट ही काम करै
मशीन और कल पुर्जो का
वो ही इंतजाम करै
मजदूर बैठ आराम करै
रोबोट बणया हितकारी।
सभी काम रोबोट करै
मौज करै सब नरनारी।।

सैना की निगरानी म्हं
रोबोट ही टैंक चलावै
तोप सै गोले और मिसाइल
मिग और जैट उड़ावै

देश की सरहद वही बचावै
कर कै भारी बमबारी।
सभी काम रोबोट करै
मौज करै सब नरनारी।।

गुरुओं की दिक्कत मिटज्याँ
बच्चें रोबोट पढ़ावै
घर बैठे ही मिलज्याँ डिग्री
डाक घराँ पोंहचावै
वो ही सारे ठाठ करावै
सिखा हुनर हुशयारी।
सभी काम रोबोट करै
मौज करैं सब नर नारी।।

लुगाइयाँ की हड़ताल

सभी लुगाई मिलजुल कर के
जै कर दे हड़ताल।
नींबू महँगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

कुछ तो गम म्हं दुःख पावेंगे
कुछ की उठज्या अर्थी
ना फूकण नै जगहाँ मिलैगी
ना गाडण नै धरती
जम के दूत घुमावेंगे
गगन और पाताल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

बख्त ऊठ डांगर ढोरां नै
सानी न्यार भी घाल्लेंगे
गोबर घाल पराती म्हं
सिर पे ठा चाल्लेंगे
एक घूँट ना धार मिलै
या करड़ाई की चाल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।

अब घसियारें मर्द बणेंगे
घास खोद कै ल्यावैंगे

फेर गंडासा न्यार काट कै
डांगर ढोर चरावेंगे
दिन रात खरपाड़ करणिये
खड़े मिलै तत्काल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

कोये फूंकै खड़्या रसोई
कोये चूल्हा सुलगावैगा
गैस सिलैंडर नहीं जल़े तो
झीखेगा झल्लावैगा
नखरे ढीले हो ज्यांगे
जब नहीं गल़ैगी दाल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

आधे कच्चे आधे पक्के
मोटे टिक्कड़ पोवेंगे
सिलबट्टे पे रगड़े चटनी
खाते पीते रोवेंगे
अक्ल ठिकाणे आ ज्यागी
पड़्या गले जंजाल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

हुक्का पीणा याद रहे ना
ना कोई पत्ते खेल सके
लूणी घी गटकण आल़ा भी

आगे दंड ना पेल सके
गलियाँ म्हं हांडण आला़ की
बंद होज्याँ खुड़ताल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

ऐबी टाबर छाती फूकेंगे
काबू म्हं ना आवेंगे
तोड़ा फोड़ी म्हं मस्त रहेंगे
दिनभर उधम मचावेंगे
मर्दां नै नाच नचावेंगे
बजा बजा करताल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

पंच फैसले रोज करणिये
घर म्हं राड़ बढावेंगे
लंबरदार बणे हांडे जो
अपणी जाड़ पड़ावैंगे
मूँछ्या आले मर्दां की इब
उधड़ेगी गोरी खाल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

काली डाकण रात कटे ना
पड़े पड़े पिपावेंगे
प्यारी तू हड़ताल तोड़ दे
पैरां हाथ लगावेंगे

हाथ जोड़ मिमावेंगे
जो ठोक्या करते ताल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

राम नाम की जपेंगे माला
ढोंगी नर हरजाई
शीश झुका मन्नत मांगेंगे
राजी रहे लुगाई
दिन म्हं रात म्हं होय खिंचाई
उड़ज्या टाँट के बाल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।

रही पैर की जूती जोरू
आज खड़ी सै अड़ कै
अधिकार बराबर का मांगे
न्यूँ आँख्याँ म्हं रड़कै
छोह म्हं आ मर्द यूँ भड़कै
ना काबू म्हं भूचाल।
नींबू महंगे हो ज्यांगे
मर्द फिरैं बेहाल।।
सभी लुगाई राजी हो कै
तोड़ो जल्दी हड़ताल।
मिलजुल मौज मनावांगे
मन सैं हो खुशहाल।।

करवा चौथ

करवा चौथ का व्रत आया
जब घणी हुई तकरार।
पत्नी सजधज हुई खड़ी
मायूस हुआ भरतार।।

पत्नी बोली व्रत करूँगी
सामान जले तू ल्यादे
दिन भर भूखी ठहर सकूँ
कोय ऐसा जूस पिलादे
चूड़ी कंगन हार फैंसी
इक साड़ी की दरकार।
पत्नी सजधज हुई खड़ी
मायूस हुआ भरतार।।

पति देव लाचार हुआ पर
झूठा रोब जमाया
प्यार जता कर यूँ बोला
कर द्यूँ मन का चाह् या
सोने की मैं चैन घड़ा दूँ
कंठी और गलहार।
पत्नी सजधज हुई खड़ी
मायूस हुआ भरतार।

पत्नी बोली आँख मिला कै
हाथ मेरे सिर धर दे
सांझ पड़ी सैं दूर अभी

कहणा मेरा कर दे
और सुनहरा चाँद देख लूँ
मत झूठा कर इकरार।
पत्नी सजधज हुई खड़ी
मायूस हुआ भरतार।

यूँ ही करवा चौथ मनी तो
उम्मर मेरी बढ़ज्या
फरमाईस के चक्कर म्हं
राड़ और भी बढ़ज्या
बेशक चाहे कर्जा चढ़ज्या
पक्का कर इजहार।
पत्नी सजधज हुई खड़ी
मायूस हुआ भरतार।।

काव्य मंच पै रेस

काव्य मंच पै रेस हुई
हो रही मारामारी।
परिचय के मोहताज कवि जी
मांगे कुर्सी न्यारी।।

ढीला कुरता तंग पजामा
सरकंडे सी लेरया टांग
इसी उसी रेस दौड़ म्हं
बहोत रही सै इसकी मांग
सदा टुल्ल नशे म्हं झूम्या
इसने पी राक्खी सैं भांग
घणा मजा तो तब आवैगा
घिया सी दिखलावै जांघ
रेवाड़ी के सैंठा तै
सांठगांठ सैं भारी।
परिचय के मोहताज कवि जी
मांगे कुर्सी न्यारी।।

भारे मुँह पै मूँछ सफाचट
पीक पान की फैंके सैं
औरां की डायरी नै रट कै
अपणी छाप नै टेके सैं
पेट फुला कै रेस लगावै
कोरी झूठ की से के सैं
कुणबा इसका रूठ रह्या सैं

पत्नी बैठी मैके सैं।
खाल शेर की औढ़ कै बैठ्या
घिग्गी बंध रह् यी न्यारी।
परिचय के मोहताज कवि जी
मांगे कुर्सी न्यारी।।

यो सैं बांका छैल छबीला
नौसिखिया सा घोड़ा
आज तलक तो रहा भटकता
नहीं रेस म्हं दौड़ा
ओरों की तो दाद बंधाई
बण्या कभी न रोड़ा
कितनी कर ली टांग खिंचाई
पिंड न म्हारा छोड़ा
सदा ही घर सैं रहा भगौड़ा
पकड़-धकड़ सैं जारी।
परिचय के मोहताज कवि जी
मांगे कुर्सी न्यारी।।

एक तो बूढ़ा खूसट बैरी
जिसकी गंजी टांट सैं
बड़ी-बड़ी यो रेस जीतता
पक्का यो खुर्राट सैं
हंसा के रथ करै सवारी
चौखे ठाठबाट सैं
मेरे जैसैं चिलम भरणिए
पूरे तीन सौ साठ सैं
धनवानो बलवानो सैं

इसकी पक्की यारी।
परिचय के मोहताज कवि जी
मांगे कुर्सी न्यारी।।

संयोजक नै करा फैसला
जब परिणाम सुणाया
छोटा-मोटा दिया लिफाफा
उल्लू उन्हें बणाया
मंजा खिलाड़ी वही रेस का
जो सब तै पाछे आया
हास्य-व्यंग्य का राग सुणा कै
सबका पेट हिलाया
संयोजक ने फरमाया
कर लो घर की त्यारी।
परिचय के मोहताज कवि जी
मांगे कुर्सी न्यारी।।

अबला हुई हलाल

कुण इसके दुखड़े रोवेगा
ना कोई करे मलाल।
मर्दों की मनमानी सैं
अबला हुई हलाल।।

मर्दों ने घणे जुल्म करे
फिर भी माथा टेक्या
अपणा मतलब साध लिया तब
बीच सड़क पे फैक्याँ
बणा-बणा टोळी व एका
कर्‌यी घणी बेहाल।
मर्दों की मनमानी सैं
अबला हुई हलाल।।

गम देकर के इसै सताया
द्वार नरक का खोल्याँ
मात-पिता बेरहम बणे
जब दहेज तराजू तोल्याँ
ऊँची बोली जो बोल्याँ
बेच दिया तत्काल।
मर्दों की मनमानी सैं
अबला हुई हलाल।।

स्वार्थ की जिब बणी खिलौणा
ठोकर तैं ठुकराया

मन की इच्छाओं को कुचल्याँ
अर दोषी ठहराया
क्रोध कहर सा बरपाया
कर दई कती निढ़ाल।
मर्दों की मनमानी सैं
अबला हुई हलाल।।

हुया आबरू तक का सौदा
अत्याचार सहे
ऊँचें ओहदे पर होकर भी
घणी लाचार रहे
खड़ी सड़क पे किसै पुकारे
सुणे नहीं नंदलाल।
मर्दों की मनमानी सैं
अबला हुई हलाल।।

आज की अबला जाग गई सै
लेगी नर सै बदला
इब तो सारा भ्रम तोड़ द्यो
नारी रही न अबला
दुख सह कर बण गई सबला
जालिम मर्दों का काल।
मर्दों की मनमानी सैं
अबला हुई हलाल।।

किसान भटक गया

कृषक भूल्या सीधा रस्ता
बीज कुबध के बोवै सै।
आपाधापी लाग रही इब
मूंड पकड़ के रोवै सै।।

खुद ही खेत का बण्या डॉक्टर
छिड़के खूब दवाई
घणी उपज के लालच म्हं
या धरती बांझ बणाई
सीजन की दे फसल छोड़
बेसीजन करे बुवाई
बीच खेत म्हं तंबू ताणे
पेड़ों की करे कटाई
आफत प्रदूषण की आई
हरियाली नै टोहवै सै।
आपाधापी लाग रही इब
मूंड पकड़ के रोवै सै।।

पशु पालणे छोड़ दिए
पड़े दूध दही के लाले
बैल ऊँट अब छोड़ दिए
गाय भैंस ना पाले
कैल्शियम का देके टोनिक
ज्यादा दूध बढ़ा ले
दूध बेच व्यापार करे तो

पैसा घणा कमा ले
फैट बढ़ा के दूध बेच दे
देशी घी नै टोहवै सै।
आपाधापी लाग रही इब
मूंड पकड़ कै रोवै सै।।

कृषक व्यापारी बणग्या
कर रहा सौदे बाजी
कोठे कुठली भरे नाज कै
मन म्हं हो रहा राजी
मंडी म्हं जब गया बेचने
पड़ गई उल्टी बाजी
तेरे नाज की मांग रही ना
कहण लगा लाला जी
लाभ के बदले हानि होग्यी
सही बचत नै खोवै सै।
आपाधापी लाग रही इब
मूंड पकड़ कै रोवै सै।।

किसान मेहनती रहा नहीं
मजदूरों पै आस करै
बेहूदी का बणा दीवाना
दारु पी बकवास करै
चौपालों म्हं ताश यो पीटे

मजे सै टाईम पास करै
हार जीत के पड़ा फेर म्हं
ना खेती पै विश्वास करै

बैंक कर्ज जब ना उतरे
धरती बेच के सोवै सैं।
आपाधापी लाग रही इब
मूंड पकड़ कै रोवै सैं।।

बैरी पाकिस्तान हमारा

जितना तुझको चाहया हमने
तुमने किया किनारा।
मित्र बणाया बणग्या बैरी
पाकिस्तान हमारा।।

आँख दिखाई अकड़ दिखाई
कई बार मुँह की खाई
सदा पीठ म्हं छुरा घोंपता
शरम जरा भी ना आई
सच्ची बात समझ हरजाई
कितना किया इशारा।
मित्र बणाया बणग्या बैरी
पाकिस्तान हमारा।।

एलओसी पर कब्जा कर कै
सिर पै बैठा जम कै
आतंकी को पाले पोसैं
करै धमाके बम कै
चोरी छुप के आ धमकै
बुरी मौत जाए मारा।
मित्र बणाया बणग्या बैरी
पाकिस्तान हमारा ।।

जग कहता पाखंडी ढोंगी
नित नया खेल खिलाता

संधि और समझौता कर कै
हम सैं हाथ मिलाता
खाली झोली फैलाता
जब ढूंढे नया सहारा।
मित्र बणाया बणग्या बैरी
पाकिस्तान हमारा।।

समझाया पर समझा ना ही
कुण कितना समझावैगा
गद्दारी का फल पड़े भोगना
कब तक पाप छिपावैगा
सिर धुन-धुन पछतावैगा
जिब खेल बिगड़ज्या सारा।
मित्र बणाया बणग्या बैरी
पाकिस्तान हमारा।।

दारू पीणी छोड़ दई

खुद ही नर्क बणाया जीवन
खुद ही किस्मत फोड़ लई।
बहोत घणा दुःख पायाँ पाछै
दारू पीणी छोड़ दई।।

पीण प्याण के चक्कर कै म्हं
बेच दई धरती सारी
बर्तन भांडे टूम ठेकरी
खाली कर दी अलमारी
छोड़ दई टूच्चाँ की यारी
आज ये बोतल तोड़ दई।
बहोत घणा दुःख पायाँ पाछै
दारू पीणी छोड़ दई।

रोज ही दिन म्हं मनज्या होली
रात म्हं मनै दिवाली
पाड़ौसी जिब तान्नै मारै
तंग रह्वै घरवाली
धक्का मुक्की करै मवाली
आफत घर म्हं जोड़ लई।
बहोत घणा दुःख पायाँ पाछै
दारू पीणी छोड़ दई।।

कदे चैन सैं सोया ना
रात रात भर जागू था

ना खाया ना खावण दिया
मरण कटण नै भागू था
गुस्सैं और नशे म्हं भर कै
माँ की बांह मरोड़ दई।
बहोत घणा दुःख पायाँ पाछै
दारू पीणी छोड़ दई।।

बहोत घणी कोशीश करी थी
फेर कदे नहीं पीऊँगा
अब दे दो बख्शीश मुझे
मैं लंबी आयु जीऊँगा
पाँव भी धो-धो पीऊँगा
राह कुबध की मोड़ दई।
बहोत घणा दुःख पायाँ पाछै
दारू पीणी छोड़ दई।।

भाग चलूँ मैं दिल्ली

आधी आयु बीत लई मुरझा गई अब लिल्ली।
मेरे जी म्हं न्यूँ आवै सै भाग चलूँ मैं दिल्ली।।

भोले बाबा सै कहण लग्या
चट्टा बी.ए. पास
तावल कर के दिवा नौकरी
वो भी फस्ट क्लास
सुण भोले मेरी अरदास
लोग उड़ावै खिल्ली।
मेरे जी म्हं न्यूँ आवै सैं भाग चलूँ मैं दिल्ली।।

हाथ जोड़ न्यूँ कहण लग्या
एक कँवारा छोर्‌या
जल्दी सी ब्याह करवा भोले
जीणा मुश्किल होर्‌या
पैंतालीस की उम्मर होग्यी
लोग दिखावै टिल्ली।
मेरे जी म्हं न्यूँ आवै सैं भाग चलूँ मैं दिल्ली।।

भोले सुण अरदास मेरी
मैं हाली दीवाना
फैशन की मैं होड़ करूँ
भर दे मेरा खजाना
बिना कमाई महंगाई म्हं
जेब हो गई ढिल्ली।
मेरे जी म्हं न्यूँ आवै सैं भाग चलूँ मैं दिल्ली।।

पाहयाँ म्हं पड़ करूँ वंदना
कर्या करूँ कविताई
बिन आशीष तुम्हारें बाबा
आवै नहीं रसाई
हे त्रिलोकी नाथ रचाओ
कविता मेरी रसिल्ली।
मेरे जी म्हं न्यूँ आवै सैं भाग चलूँ मैं दिल्ली।।

तीन गुणों की आत्मा

सत् रज तम इन तीन गुणां नै
कुदरत ही उपजावै सै।
तीन गुणाँ तै बणी आत्मा
माणस देही पावै सै।।

सतगुण जग को करता रोशन
निर्मल रूप बणा कै
ज्ञान ध्यान सै सदा बांधता
ज्ञान आसक्ति पा कै
इंद्रिय ज्ञान जता कर कै
सतगुण भाव बढ़ावै सै।
तीन गुणों सै बणी आत्मा
माणस देही पावै सै।।

राग रजोगुण पैदा करता
लोभ वासना मन भावै
कर्म फलों की आसक्ति सै
मन बेबस हो जावै
खुदगर्जी मन उपजावै
मनुष्य लोक मन चाहवै सै।
तीन गुणों सै बणी आत्मा
माणस देही पावै सै।।

क्रोध तमोगुण पैदा करता
मोहजाल फैला कै

निद्रा भय आलस भरता
कर्तव्य सैं नीत डिगा कै
सदा तमोगुणी दुःख पाता
अज्ञान उसै भटकावै सै।
तीन गुणों सैं बणी आत्मा
माणस देही पावै सै।।

निर्मल फल सुख का लागे
जब बीज सतोगुण बोवै
राजस फल दुखदायी लागे
अज्ञान तमोगुण टोहवै
तीन गुणों की खोड़ भरी
ईश्वर म्हं ध्यान लगावै सैं।
तीन गुणों सैं बणी आत्मा
माणस देही पावै सैं।।

जो सतगुण को धारण करता
स्वर्ग लोक को जावै
जो रजगुण को धारण करता
नरक लोक रह जावै
योनि नीच तमोगुण पाता
जन्म-जन्म दुःख पावै सैं।
तीन गुणों सैं बणी आत्मा
माणस देही पावै सैं।।

बागड़ी बणग्या रै मजदूर

मेहनत सै ना मुँह मोड़े
ना रहे काम सै दूर।
हाड़ माँस का बण्या बागड़ी
बणग्या रै मजदूर।।

मैले कुचले कपड़े पहने
लथपथ रहे पसीने म्हं
गर्मी से जब तपज्या काया
हूक सी उठज्या सीने म्हं
पेड़ों की शीतल छाया म्हं
आनंद मिलै भरपूर।
हाड़ माँस का बण्या बागड़ी
बणग्या रै मजदूर।।

भोर सवेरे जल्दी उठ कै
काम करण नै भटकै सै
सारी रात ठंड म्हं सिकुड़े
पाँव खाट म्हं लटकै सै
टूटी खटिया झंगा झोली
म्हं सोणा मंजूर।
हाड़ माँस का बण्या बागड़ी
बणग्या रै मजदूर।।

भारी वर्षा दुश्मन इणकी
चौपट कर दे धंधा

मजदूरी की बाँट जोहता
सड़क खड़ा हर बंदा
कहते वक्त बड़ा गंदा
होग्ये मालिक दूर।
हाड़ माँस का बण्या बागड़ी
बणग्या रै मजदूर।।

बिना बागड़ी काम चलै ना
खेल बिगड़ग्या सारा
मेहनत करनी ही मुशकिल सै
फिर दे कौन सहारा
सबको लगै बागड़ी प्यारा
मानों बात हजूर।
हाड़ माँस का बण्या बागड़ी
बणग्या रै मजदूर।।

मन की बात

सुणाऊँ अपणे मन की बात।
बिना सुणाएँ दबे ना अंधड़
उमड़े सैं जज्बात।
सुणाऊँ अपणे मन की बात।।

रहन-सहन हो मेरा सादा
बण के रहूँ जगत का दादा
साथ रहे दो-चार बाऊँसर
लड़ने को मैं रहूँ अमादा
अवश्य निभाऊँ अमन का वादा
अपणी बिछा बिसात।
सुणाऊँ अपणे मन की बात।।

मैं एक नेता बण जाऊँ
सत्ता के संग तण जाऊँ
देश-विदेश की सैर करूँ
नगद कमीशन मैं खाऊँ
जोड़ विदेशी धन लाऊँ
गुप्त करूँ मुलाकात।
सुणाऊँ अपणे मन की बात।।

मेरा आसमान म्हं डेरा हो
परियों का रैन बसैरा हो
रातें भी रंगीन सजी हो
रोज ही नया सवेरा हो

सच्चा माल भतेरा हो
पहरा हो दिन-रात।
सुणाऊँ अपणे मन की बात।।

मैं चाहूँ तो कवि बणूँ
साफ व सुथरी छवि बणूँ
मेरी कविता करे उजाला
मैं भी 'दिनकर' रवि बणूँ
त्यागी बनूँ तपस्वी बणूँ
बढ़े मेरी औकात ।
सुणाऊँ अपणे मन की बात।।

(माँ द्वारा बेटी की हत्या होने पर, बेटी माँ कोस रही है)

निर्दया

सब को साँच बता दे माता
ऐसी कै लाचारी।
पैदा कर कै मार दई
बण गई तू हत्यारी।।

क्यों नीयत तेरी हराम हुई
बेइज्जत तू सरेआम हुई
माँ ममता का गला घोट कर
जग म्हं तू बदनाम हुई
तू डाकण बण सरनाम हुई
हे माणसखानी महतारी।
पैदा कर के मार दई
बण गई तू हत्यारी।।

पाप कर्म की सोच क्यों जागी
दुष्कर्मों को करणे लागी
मुझें मौत की नींद सुला के
बणी नरक की तू भागी
खुद ही तू औलाद को खागी
हे नागिन काली कलिहारी।
पैदा कर के मार दई
बण गई तू हत्यारी।।

क्या बेटी का राग न भाया
रोशन हुआ चिराग बुझाया

प्यार प्रीत की मिटा निशानी
नारी कुल पे दाग लगाया
खुद ही अपणा भाग मिटाया
क्यों झूठी मारे किलकारी।
पैदा कर के मार दई
बण गई तू हत्यारी।।

एक पीढी का अवसान किया
खुद को निस्संतान किया
किस लालच के वशीभूत हो
घर को कब्रिस्तान किया
बेटी को निष्प्राण किया
तू नारी अत्याचारी।
पैदा कर के मार दई
बण गई तू हत्यारी।।

अब तेरा पर्दा फाश हुआ
हर नारी का उपहास हुआ
सुणकर तेरे नीच कर्म को
जन जन बड़ा हताश हुआ
तुझको ना अहसास हुआ
तू अबला नहीं बिचारी।
पैदा कर के मार दई
बण गई तू हत्यारी।।

जिसा कर्म सैं उसा नतीजा
मां दिल तेरा नहीं पसीजा
खुद पैरों पर मार कुल्हाड़ी

अपणे जाल म्हं आप फँसी जा
इब तू सीधी जेल चली जा
बाट देख रही लारी।
पैदा कर कै मार दई
बण गई तू हत्यारी।।

यार मेरी ब्आण ना छूटें

बेशर्मी की चढ़ी खुमारी
कर्म भी मेरे फूटे।
यार मेरी ब्आण ना छूटें।

मिली नौकरी सरकारी जब
ठाठ भी रह्ये अनूठें
मालामाल खुशहाल हुआ
जब रोज रुपयै लूटें।
यार मेरी ब्आण ना छूटें।।

जब लालच की ललक बढ़ी
मित्र यार सब रूठें
रिश्वत खूब बटोरी मैंने
कागज भर दिये झूठें।
यार मेरी ब्आण ना छूटें।।

जब सुरापान की चढ़ी खुमारी
पैंसै यारों सैं झूटें
दो नंबर के काम किए सब
अब कुर्सी चाहे छूटें।
यार मेरी ब्आण ना छूटें।।

अपणो सैं जब आँखें बदली
रिश्ते नातें टूटे
आज नौकरी चली गई जब

लोग दिखावे गूँठे।
यार मेरी ब्आण ना छूटें।।

खुरापात भी बहुत करी
कई उखाड़े खूटें
गधा पच्चीसी बीत गई अब
ब्आण हुए सब भूठें।
यार मेरी ब्आण ना छूटें।।

बीज बदी के बोवै

यार क्यूँ बीज बदी के बोवै।
एक दिन ऐसी मार पड़ेगी
मूंड पकड़ के रोवै।
यार क्यूँ बीज बदी के बोवै।

बोए बीज बदी के रावण
कुल का नाश हुआ
ज्ञानी, ध्यानी, अभिमानी का
पर्दा फाश हुआ
ऐसा सत्यानाश हुआ
विधवा वारिस टोहवै।
यार क्यूँ बीज बदी के बोवै।

बदी करी थी दुर्योधन ने
जाल कपट का बिछवाया
सभा बीच कुल की नारी का
चीर हरण करवाया
भाई-भाई को लड़वाया
झूठे झगड़े झोवै।
यार क्यूँ बीज बदी के बोवै।

झूठ और बेईमानी सै
जिसने लोगों को लूटा
ऐसै ढोंगी पाखंडी का

एक दिन भांडा फूटा
जग सैं उनका नाता टूटा
भार पाप के ढोवै।
यार क्यूँ बीज बदी के बोवै।

जिसने बीज बदी का बोया
नहीं कभी सुख पाया
बेशर्मी सैं रहा भटकता
अपणा सन्मान घटाया
करणी भरणी का फल पाया
होणी होकर होवै।
यार क्यूँ बीज बदी के बोवै।

फोकटए यार

कदे ना धैला खर्च करैं
रहैं खाण नै त्यार।
मिले भाई ये फोकटए यार।।

मोहताज बणे इक इक पाई के
मांगे हाथ पसार
नहीं जेब म्हं मिलै अठ्ठनी
तनख्वाह साठ हजार।
मिले भाई ये फोकटए यार।।

रह्ये निठल्ले दर दर भटके
करे कपट की कार
जित भी माल मिले फोकट का
ले लूट झपट्टा मार।
मिले भाई ये फोकटए यार।।

यार की जेब भरी दीखे तो
टपके मुंह सैं लार
करे सफाचट जेब यार की
पक्के पोकेट मार।
मिले भाई ये फोकटए यार।।

चापलूस बण करे हजूरी
ये धूर्त मक्कार
जब खर्चण की बारी आवे
बण जावे लाचार।

मिले भाई ये फोकटए यार।।

हर मौके मक्खीचूस बणे
मन म्हं सै हुशयार
औरों का ये माल उड़ावै
कभी ना माने हार।
मिले भाई ये फोकटए यार।।

गांव गली और शहर-शहर म्हं
इनकी ही भरमार
पिंड छुड़ाएँ ना छूटें अब
सब कोशीश बेकार।
मिले भाई ये फोकटए यार।।

जेब कर लई भारी

गुण और औगुण सभी समेटे
भोग ले अब लाचारी।
संकट और मुसीबत की जड़
जेब कर लई भारी।।

झूठ कपट और रिश्वत का
पैसा खूब भर्‌या
इज्जत कै ना लगज्या बट्टा
बदनामी सै नहीं डर्‌या
हेरा फेरी सै पेट भर्‌या
खाया माल सरकारी।
संकट और मुसीबत की जड़
जेब कर लई भारी।।

काम क्रोध मद लोभ मोह कै
लिक्खे पते ठिकाणे
करतूता के काले कागज
जेब म्हं लगा छुपाणे
नंबर टेलीफोन लिखाणे
हो रही मारामारी।
संकट और मुसीबत की जड़
जेब कर लई भारी।।

कदाचार का साथ दिया था

त्याग दई मानवता
श्रम सैवा को भूल गया
नस नस म्हं दानवता
छाई मन म्हं कामुकता
हो गया पापाचारी।
संकट और मुसीबत की जड़
जेब कर लई भारी।।

बड़ा कठिन सै खाली करणा
बेढब करी कमाई
परोपकार और दान पुण्य म्हं
कौड़ी नहीं लगाई
नीयत की कैसैं करूँ सफाई
बणूँ मैं शिष्टाचारी।
संकट और मुसीबत की जड़
जेब कर लई भारी।।

हमे दुखों सैं जोड़ गया

छोड़्या मेरा साथ भाग्य को फोड़ गया।
हमें दुखों सैं जोड़ गया।

स्वभाव तेरा था सीधा सादा
कुणबे का था बोझा लादा
नैन मिलाए कसमें खाई
प्यार जताया हद सै ज्यादा
नहीं निभाया अपणा वादा
प्रीत का बंधन तोड़ गया।
हमें दुखों सैं जोड़ गया।।

तूने चाहया हमनें पाया
नखरा तेरा खूब उठाया
कोशीश सै हालात भी बदले
रिश्ता नाता तुझे न भाया
लाचारी ने तुझे झुकाया
कर्म तू म्हारे फोड़ गया।
हमें दुखों सैं जोड़ गया।।

तन मन तेरा बड़ा अनोखा
स्वर्ग नरक का बणा झरोखा

तेरे भ्रम म्हं यूँ ही भटके
बुरे वक्त म्हं तुझे पजोखा
छदम दंभ म्हं खाया धोखा
जीवन नैया मोड़ गया।
हमें दुखों सैं जोड़ गया।।

भूत भविष्य को तूने तोला
वर्तमान संग तेरे डोला
जिसने तेरी राह को रोका
सदा अकड़ के उससैं बोला
पड़ी मुसीबत बण गया भोला
फिर क्यों रण सैं दौड़ गया।
हमें दुखों सैं जोड़ गया।।

दुनिया बहुरंगी बेडोल

ये दुनिया बहुरंगी बेडोल।
कथनी-करनी उड़ा रही सै
उनका आज मखोल।
ये दुनिया बहुरंगी बेडोल।

चापलूस चाटूकारों के
सदा ही बजते ढोल
जब-जब शासन सत्ता बदले
उनकी खुलती पोल।
ये दुनिया बहुरंगी बेडोल।

बगुले जा बैठे हंसों म्हं
बोले बड़े-बड़े बोल
मछली देख सुनहरी कोई
तन सैं करे किलोल।
ये दुनिया बहुरंगी बेडोल।

पहन के खादी बन गये नेता
नकली जिनके रोल
कुर्सी खातिर गुत्थम-गुत्था
ताण रहे पिस्तोल।
ये दुनिया बहुरंगी बेडोल।

बहुरुपिये भ्रष्टाचारी

माल कर रहे गोल
ईमानदार बेभाव बिक रहे
झूठ बिके बेमोल।
ये दुनिया बहुरंगी बेडोल।

कंप्यूटर द्वारा बदली

मिले स्टेशन मन मर्जी कै
सही जुगाड़ किया।
बदली कंप्यूटर सै कर के,
चाल़ा पाड़ दिया।।

बदली करवाणे की खातिर
चक्कर काट्या करते
मंत्री और विधायक के
तलवै चाट्या करते
किस्मत म्हारी छाट्याँ करते
उन्हें पछाड़ दिया।
बदली कंप्यूटर सैं करके,
चाल़ा पाड़ दिया।।

बदली के ठेकेदारों के
पड़ग्यी माथे तोड़ी
सारी बदली मुफ्त हुई
हाथ लगी ना कोड़ी
कंप्यूटर ने कसर ना छोड़ी
उन्हें लताड़ दिया।
बदली कंप्यूटर सैं करके
चाला पाड़ दिया।।

बण्या पसंद का नया पोर्टल
बाँटा सात जोन म्हं

क्लिक-क्लिक कर बटन दबाया
मैसिज आया फोन म्हं
दिखी सियासत नई टोन म्हं
ना खिलवाड़ किया।
बदली कंप्यूटर सैं करके,
चाला पाड़ दिया।।

भ्रष्टाचारी रहे ताकते
बंद जुबान हुई
नेताओं की हठधर्मी भी
देखो बेजान हुई
मनोहर सत्ता मेहरबान हुई
गुरुओ सैं लाड़ किया
बदली कंप्यूटर सैं करके
चाला पाड़ दिया।

घंटू होग्या फेल़

हाय म्हारा घंटू होग्या फैल़।
कई बार समझाया था
हो लै टीचर की गैल।
हाय म्हारा घंटू होग्या फैल़।।

महंगा ट्यूशन करवाया
टीचर थी फीमेल
मजनूँ बण कै फिरा भटकता
खाई धक्कम पेल।
हाय म्हारा घंटू होग्या फैल़।।

कई किलासों म्हं जा अटका
पाछै दिया धकेल।
ऑखर एक भी सीख्या कोन्या
मन म्हं बणा पटेल।
हाय म्हारा घंटू होग्या फैल़।।

दाँव पेच भी सिखलायै
कर्‌या बड़ों तैं मेल
सभी जतन बेकार हुए
बिगड़ गया सै खेल ।
हाय म्हारा घंटू होग्या फैल़।।

छुट्टी के दिन मौज उड़ाई
खूब छुड़ाई गुलेल
अब्बल दरजे का आवारा
मानै नहीं हठेल।
हाय म्हारा घंटू होग्या फैल़।।

दिनभर धक्के खाता डोलै
लोग कहें बिगड़ैल
पीवै प्यावै आँख दिखावै
इब डालै कौन नकेल।
हाय म्हारा घंटू होग्या फैल़।।

मन होग्या सरपंच

सारे तन पै हुक्म चलावै
रचै नए प्रपंच।
अनुभव और उमर पाकर कै
मन होग्या सरपंच।।

मन के कारण देखे आंखें
मन सै सुणते कान
मन के कारण बुद्धि चलती
मन सै होता ध्यान
मन करता सिर का सन्मान
सदा ही रहता टंच।
अनुभव और उमर पाकर कै
मन होग्या सरपंच।।

मन ही बणावै नई योजना
तन का करै विकास
अंधकार मन दूर करै
ज्ञान का कर प्रकाश
मन का कोई ना अवकाश
चढ़ै रोज ही मंच।
अनुभव और उमर पाकर कै
मन होग्या सरपंच।।

काम क्रोध मद लोभ ऊपजे
मन म्हं मच ले मोह
अपणे ढंग सैं करै फैसला
ऊँच नीच ले टोह
करै शांति मेट ले छोह
करै इकठ्ठे पंच।
अनुभव और उमर पाकर कै
मन होग्या सरपंच।।

हाथ पैर पै मन का शासन
कर्म यही मनरेगा
अंदर बाहर नाली नालें
जिनको स्वच्छ करेगा
सबका मन ही पेट भरेगा
करो ठीक समय पै लंच।
अनुभव और उमर पाकर कै
मन होग्या सरपंच।।